होली रे होली....

होली रे होली, फिर रंग ले आई होली
मौसम ले अगंड़ाई,बदले मिजाज उसके
शीत विदाई, ग्रीष्म ऋतु आहट है आई
फिर रंग फुहारों, भीगे हर घर आंगन

रंग रंगीली खुशियों भरी आई रे होली,
ढोल मंजीरों से, फागुनी गीत-गूंज भरी
भर ले मुठ्ठी गुलाल, हाथ में पिचकारी,
रस भर दे अमृत, नख से शिखर तक,
ठुमक ठुमक राधा, पग पग कन्हैया...
रास रसाये, राधा प्रियतम रंग रसिया
है आई रे होली

याद करें ब्रज गलियों की रंगीली होली,
अनोखी निराली ,फूल-रंग रंगों थी भरी
ऐसी.. कृष्ण नगरी 'बरसाना' की होली,
रंग बरसे खेले होली, रघुवीरा अवध में
राम, हाथ केसर, कुसुम भरी पिचकारी,
लक्ष्मण हाथ अबीर गुलाल भरी झोली

प्रेम रंगों में रंगी यहां अंबर भर होली,
चलो.. मिल कर यूंही खुशियां-प्यार बाटें,
बुराई मिटाए, दहन करें सब दुःख पीड़ा,
मार भगाए हर रोग लठमार होली से
मानवता भर दुनिया को रंगीला बनाए

बचें रहे हुड़दंगी... टोलियों की मंशा से
रंगों का त्योहार है, रंग न होने दे फीका,
क्या खूब रंगारंग उत्सव है मिलन भरा
मस्तक सजे गुलाल, मुठ्ठी भरे अबीरा
गिले शिकवे मिटा यूं मौज मस्ती भरें,
स्नेह वर्षा, आशीर्वाद ,दुआएँ हैं समेटे
है आई रे होली

चलो मिलजुल होली जश्न मनाए
उमंग उत्साह रंगों से घुली रहे होली
खुशी-बांटे यूं रंग जमें, होली है होली..

गीतांजलि सक्सेना 2023